समाज में स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान अविस्मरणीय: सुमेधानंद

अमर उजाला ब्यूरो

महेंद्रगढ़।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रयोजित स्वामी दयानंद सरस्वती पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का रविवार को समापन हो गया। इस मौके पर सीकर (राजस्थान) से सांसद स्वामी सुमेधानंद सरस्वती ने मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत की जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने की। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि समाज व देश के लिए स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने जहां आजादी की अलख जगाने का काम किया। वहीं, छुआछूत, अशिक्षा जैसी सामाजिक बुराइयों पर भी चोट की इससे पूर्व कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. आर.सी. कुहाड़ ने कहा कि भले ही स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म गुजरात में हुआ हो,

संगोष्ठी के समापन पर सांसद सुमेधानंद सरस्वती को सम्मानित करते कुलपति आरसी कुहाड़।

उनकी कर्मस्थली मुख्य रूप से हरियाणा रही। प्रो. कुहाड़ ने विश्वविद्यालय में स्वामी दयानंद सरस्वती पीठ की स्थापना के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय का आभार जताया। नारनौल, महेंद्रगढ़ व रोहतक में सबसे ज्यादा आर्य समाज के अनुयायी हैं। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति प्रो. सुरेंद्र कुमार ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती ने महिला शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा व शिक्षा में समानता की बात कही थी। संगोष्ठी के संदर्भ में दयानंद सरस्वती पीठ के पीठाचार्य प्रो. रणवीर सिंह ने तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल हुए शोधार्थियों व विद्वानों के विषय में एक संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की।

हकेंविवि में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दयानंद सरस्वती का योगदान अविस्मरणीय

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली की ओर से स्वामी दयानन्द सरस्वती एक क्रान्तद्रष्टा संशोधक विषय पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी रविवार को सम्पन्न हुई। समापन समारोह में सीकर (राजस्थान) से सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती मुख्य अतिथि थे। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने की।

मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि समाज व देश के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने जहां आजादी की अलख जगाने का काम किया। वहीं छुआछूत, अशिक्षा जैसी सामाजिक बुराइयों पर भी चोट की। स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने कहा कि भारत के गुलाम होने का कारण वैदिक दृष्टिकोण को भुला देना रहा। इसे मात्र कर्मकांड के तौर पर देखा गया और इसके मूल विचार को हम समझ नहीं पाए। पाश्चात्यकरण के चलते हम यह मानने लगे कि हमारा इतिहास मात्र 5000 वर्ष पुराना है जबकि आज यह सिद्ध हो चुका है कि महाभारत और रामायण का अस्तित्व था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारतीयों के सोए हुए स्वाभिमान को जगाया और अनिवार्य शिक्षा जैसे समाज हितैषी प्रयासों के माध्यम से भारत को आगे ले जाने की दिशा में प्रयास किया। रेवाड़ी के सदंर्भ में स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने कहा कि यह स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रेरणा का ही नतीजा था कि पहली सार्वजनिक गौशाला रेवाड़ी में शुरू हुई। स्वामी दयानन्द सरस्वती के आजादी में योगदान को इस बात से समझा जा सकता है कि शहीद भगत सिंह व रामप्रसाद बिस्मिल का जीवन उनके विचारों से प्रभावित रहा। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के संदर्भ में स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने कहा कि वह विश्वविद्यालय की प्रगति से बेहद प्रसन्न हैं और वह इसके विकास में जुटे कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ व उनके साथियों की हरसंभव मदद के लिए तैयार हैं।

महेंद्रगढ़। स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते कुलपति। फोटो : हरिभूमि

जातिवाद को छोड़ वर्ण व्यवस्था का पक्ष लिया

कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि भले ही स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात में हुआ हो, उनकी कर्मस्थली मुख्य रूप से हरियाणा रही। प्रो. कुहाड़ ने कहा कि विश्वविद्यालय में स्वामी दयानन्द सरस्वती पीठ की स्थापना के लिए मैं मानव संसाधन विकास मंत्रालय का आभार व्यक्त करता हूं। हरियाणा विशेषकर नारनौल, महेंद्रगढ़ व रोहतक में सबसे ज्यादा आर्य समाज के अनुयायी आज भी हैं। ऐसे में विश्वविद्यालय में इस पीठ के माध्यम से प्रो. रणवीर सिंह के नेतृत्व में एक बार फिर से लोगों को स्वामी दयानन्द के जीवन से जुड़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है। कुलपति ने इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन के लिए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली का आभार व्यक्त किया। विशिष्ट अतिथि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के कुलपति प्रो. सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने महिला शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा व शिक्षा में समानता की बात कही थी। उन्होंने समाज के पुर्नउत्थान के लिए जातिवाद को छोड़ वर्ण व्यवस्था का पक्ष लिया। वे सत्य के प्रचार में जुटे रहे।

समाज के लिए स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान अविस्मरणीय

जागरण संवाददाता, महेंद्रगढ़ : हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली की ओर से प्रायोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का रविवार को समापन हुआ। समापन समारोह में सीकर (राजस्थान) के सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने मुख्य अतिथि के रूप में हिस्सा लिया। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने की।

मुख्य अतिथि ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि समाज व देश के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने जहां आजादी की अलख जगाने का काम किया। वहीं छुआछूत, अशिक्षा जैसी सामाजिक बुराइयों पर भी चोट की। उन्होंने कहा कि भारत के गुलाम होने का कारण वैदिक दृष्टिकोण को भुला

स्वामी सुमेधानंद को स्मृति चिन्ह भेंट करते कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ● जागरण

देना रहा। इसे मात्र कर्मकांड के तौर पर देखा गया और इसके मूल विचार को हम समझ नहीं पाए। पाश्चात्यकरण के चलते हम यह मानने लगे कि हमारा इतिहास मात्र 5000 वर्ष पुराना है जबकि आज यह सिद्ध हो चुका है कि महाभारत और रामायण का अस्तित्व था। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारतीयों के सोए हुए स्वाभिमान को जगाया और अनिवार्य शिक्षा जैसे समाज हितैषी प्रयासों के माध्यम से भारत को आगे ले जाने की दिशा में प्रयास किया। रेवाड़ी के सदंर्भ में स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने कहा कि यह स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रेरणा का ही नतीजा था कि पहली सार्वजनिक गोशाला रेवाड़ी में शुरू हुई। स्वामी दयानन्द सरस्वती के आजादी में योगदान को इस बात से समझा जा सकता है कि शहीद भगत सिंह व रामप्रसाद बिस्मिल का जीवन उनके विचारों से प्रभावित रहा और स्वामी जी अक्सर ऐसी जगहों पर अपने विचारों के प्रचार के लिए जाते थे, जहां सेना की छावनी स्थापित थी।

इससे पूर्व कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि भले ही स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात में हुआ हो, उनकी कर्मस्थली मुख्य रूप से हरियाणा रही। हरियाणा विशेषकर नारनौल, महेंद्रगढ़ व रोहतक में सबसे ज्यादा आर्य समाज के अनुयायी आज भी हैं। ऐसे में विवि में इस पीठ के माध्यम से प्रो. रणवीर सिंह के नेतृत्व में एक बार फिर से लोगों को स्वामी दयानन्द के जीवन से जुड़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है। कुलपति ने इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन के लिए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली का भी आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में गुरुकुल कांगड़ी विवि हरिद्वार के कुलपति प्रो. सुरेन्द्र कुमार ने हिस्सा लिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने महिला शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा व शिक्षा में समानता की बात कही थी। हेमचन्द्राचार्य नोर्थ गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन के पूर्व कुलपति प्रो. आरएल गोदारा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। दयानन्द सरस्वती पीठ के पीठाचार्य प्रो. रणवीर सिंह ने तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल हुए शोधार्थियों व विद्वानों के विषय में रिपोर्ट प्रस्तुत की। विवि के अकादमिक सलाहकार प्रो. अमर सिंह ने धन्यवाद प्रस्तुत किया।

आयोजन हकेंवि में आयोजित दिन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन -कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने की अध्यक्षता

समाज के लिए स्वामी दयानंद का योगदान अविस्मरणीय

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'स्वामी दयानंद सरस्वती- एक क्रान्तद्रष्टा संशोधक' विषय पर केंद्रित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का रविवार को समापन हो गया। समापन समारोह में सीकर (राजस्थान) से सांसद स्वामी सुमेधानंद सरस्वती मुख्य अतिथि रहे। अध्यक्षता विवि के कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने की।

मुख्य अतिथि ने कहा कि समाज व देश के लिए स्वामी दयानंद सरस्वती का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने जहां आजादी की अलख जगाने का काम किया, वहीं छुआछूत

महेंद्रगढ़. स्वामी सुमेधानंद सरस्वती का स्वागत करते कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़

और अशिक्षा जैसी सामाजिक बुराइयों पर भी चोट की। स्वामी सुमेधानंद सरस्वती ने कहा कि भारत के गुलाम होने का कारण वैदिक दृष्टिकोण को भुला देना रहा। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती ने भारतीयों के सोए हुए स्वाभिमान को जगाया और अनिवार्य शिक्षा जैसे समाज हितैषी प्रयासों के माध्यम से भारत को आगे ले जाने की दिशा में प्रयास किया। रेवाड़ी के संदर्भ में स्वामी सुमेधानंद सरस्वती ने कहा कि यह स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रेरणा का ही नतीजा था कि पहली सार्वजनिक गोशाला रेवाड़ी में स्थापित हुई।

कई राज्यों से शिक्षकों ने लिया हिस्सा, रखे अपने विचार

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. आरसी कुहाड़ ने कहा कि विवि में स्वामी दयानंद सरस्वती पीठ की स्थापना के लिए मैं मानव संसाधन विकास मंत्रालय का आभार व्यक्त करता हूं। हरियाणा विशेषकर नारनौल, महेंद्रगढ़ व रोहतक में सबसे ज्यादा आर्य समाज के अनुयायी आज भी हैं। ऐसे में विवि में इस पीठ के माध्यम से प्रो. रणवीर सिंह के नेतृत्व में एक बार फिर से लोगों को स्वामी दयानंद के जीवन से जुड़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है। विशिष्ट अतिथि गुरुकुल कांगड़ी विवि हरिद्वार के कुलपति प्रो. सुरेन्द्र कुमार ने कहा कि स्वामी दयानंद सरस्वती ने महिला शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा व शिक्षा में समानता की बात कही थी। हेमचन्द्राचार्य नॉर्थ गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन के पूर्व कुलपति प्रो. आरएल गोदारा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। दयानंद सरस्वती पीठ के पीठाचार्य प्रो. रणवीर सिंह ने तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल हुए शोधार्थियों व विद्वानों के विषय में एक संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन विवि के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के अकादमिक सलाहकार प्रो. अमर सिंह ने प्रस्तुत किया। मंच का संचालन शिक्षा विभाग की सहायक आचार्य किरण कुमारी ने किया।